विचार बिन्दु

नारी के आंसू अपने एक-एक बूँद में एक-एक बाढ़ समाए होते हैं। –जयशंकर प्रसाद

महिला आरक्षण विधेयक– आधी हकीकत, आधा फ़साना

भारत की लोकसभा और राज्यों के विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33प्रतिशत आरक्षण का 128 वां संविधान संशोधन बिल अंततः 21 सितंबर 2023 को संसद में पारित हो गया। इसके संबंध में कई प्रकार की शंकाएं लोगों को थीं। इन सब पर विराम लगा और यह बिल लगभग सर्व सम्मति से दोनों सदनों में पारित हुआ। इस अवसर पर भारत की महिलाओं को बहुत बधाई।

यह उल्लेखनीय है कि महिला आरक्षण बिल पहले भी सरकार द्वारा संसद में लाया गया था। सबसे पहले 12 सितंबर 1996 में जब देवगौड़ा प्रधानमंत्री थे, तब 81वां संविधान संशोधन बिल लोकसभा में प्रस्तुत किया गया था किंतु इस पर आगे कोई कार्रवाई नहीं हो सकी और लोकसभा भंग होने पर यह बिल भी समाप्त हो गया। दूसरी बार इसे 9 मार्च, 2010 को यू पी ए की सरकार द्वारा 108 वें संशोधन के रूप में राज्यसभा में प्रस्तुत किया गया और वहां यह पारित भी हुआ । इसके बाद इसे लोकसभा भेजा गया जहां कुछ दलों के भारी विरोध के कारण इस पर विचार नहीं किया जा सका और सदन की कार्रवाई समाप्त होने पर यह बिल भी लोप हो गया ।

इस बार यह, न केवल दोनों सदनों द्वारा पारित किया गया अपितु इसे सभी दलों का समर्थन भी मिला। देश के दोनों प्रमुख राजनैतिक दलों में इसका श्रेय लेने की होड़ मची हुई है। कांग्रेस की नेता सोनिया गांधी ने लोकसभा में इस बिल को पारित होने को उनके स्वर्गीय पति राजीव गांधी के सपनों को साकार होना बताया तो वहीं भाजपा के नेता इसे अपनी अभूतपूर्व सफलता के रूप में देश के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं । भाजपा मुख्यालय में भाजपा की महिला सांसदों और कार्यकर्ताओं द्वारा प्रधानमंत्री पर पुष्प वर्षा कर उनका अभिनंदन किया गया जिसका प्रसारण दिन भर टीवी पर किया गया।

इस स्वागत सत्कार और श्रेय लेने के उल्लास के माहौल में किसी को यह देखने का समय नहीं है कि इस आरक्षण कानून से महिलाओं को वास्तव में कब और कितना लाभ मिल पाएगा? ओबीसी वर्ग की महिलाओं के लिए आरक्षण न करने का विरोध सभी विपक्षी दलों ने किया, किंतु उन्होंने भी बिल को पास करने में अपना समर्थन दे दिया। वैसे भी, जब ओबीसी के लिए आरक्षण लोकसभा में है ही नहीं तो उनमें महिलाओं के लिए आरक्षण की बात करना तो केवल हंगामा करने जैसा ही था। ‘कोटा विदिन कोटा’ की बात भी तभी हो सकती है जब किसी वर्ग के लिए पहले से आरक्षण तो हो। अनुसूचित जाति और जनजाति के वर्ग के कोटा में महिलाओं को 33प्रतिशत आरक्षण मिल ही गया है।

अब यह देखें कि यह लागू कब से होगा? इस बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता। इस बार संविधान में संशोधन किया गया है कि महिला आरक्षण परिसीमन के पश्चात ही लागू होगा। परिसीमन तभी हो सकता है जब जनगणना हो । क्योंकि 2026 तक सीटों की संख्या पर एक तरह से रोक लगाई गई है, इसलिए इसके बाद की पहली जनगणना 2031 में ही होगी। इस जनगणना की रिपोर्ट पूरे आंकड़ों के साथ 2032 में किसी समय आने की संभावना है । तत्पश्चात सरकार द्वारा परिसीमन आयोग का गठन किया जाएगा। सामान्यतया परिसीमन में लगभग पांच साल लगने की संभावना होती है। पहले भी परिसीमन का काम 2002 में प्रारंभ हुआ और उसकी रिपोर्ट 2007 में आई। इसका अर्थ यह हुआ कि परिसीमन आयोग की रिपोर्ट सभी प्रक्रियाओं से गुजरते हुए 2037 तक प्राप्त होगी । यदि परिसीमन में किसी प्रकार की कोई अड़चन न भी आए तो महिलाओं के लिए आरक्षण, लोकसभा और विधानसभा में 2039 के चुनाव से पहले लागू होना संभव नहीं लगता है। जो आरक्षण लगभग 15-16 वर्ष बाद लागू होने की संभावना है, उस पर इतना प्रसन्न होना और समारोह आयोजित करना केवल आगामी चुनाव में राजनैतिक लाभ लेने की दृष्टि से उठाया गया कदम ही माना जाएगा। ऐसा लगता है कि सरकार ने देश की सामान्य महिला को विवेक शून्य समझ लिया है। यह विपक्षी दलों पर निर्भर है वह कितने प्रभावी तरीके से यह बात भारत की महिला मतदाताओं के समक्ष विश्लेषण के साथ प्रस्तुत कर सकते हैं ।

इस बात का कोई स्पष्ट उत्तर सत्ताधारी दल की ओर से देने के लिए तैयार नहीं है कि महिलाओं के लिए आरक्षण आगामी चुनाव से ही लागू क्यों नहीं कर दिया गया? गृहमंत्री ने इसे संविधान में प्रावधानों के अनुसार संभव नहीं बताया। यहां यह उल्लेखनीय है कि पहले दो बार जो संशोधन विधेयक प्रस्तुत हुए थे उनमें आरक्षण लागू होने को, जनगणना और परिसीमन से नहीं जोड़ा गया था तो इस बार ऐसा क्यों किया गया? यदि कोई अड़चन थी भी सही, तो उसे आवश्यक संशोधन द्वारा हटाया जा सकता था। जब महिला आरक्षण हेतु संविधान में संशोधन किया ही जा रहा था, तो यह संशोधन भी किया ही जा सकता था कि इसे तत्काल लागू किया जाए। इसके बाद जब भी परिसीमन होता तो सीटों की संख्या उसी अनुसार निर्धारित हो जाती।

अभी से इतना शोर शराबा करना और इतना प्रसन्न होना या समारोह आयोजित करना केवल राजनीति से ही प्रेरित है। महिला आरक्षण के संविधान संशोधन संसद द्वारा पारित हुआ है यह एक वास्तविकता है किंतु इसके लागू होने की तिथि के बारे में अनिश्चितता होने के कारण हम तो फिलहाल यही कह सकते हैं कि देश में महिला आरक्षण ‘आधी हकीकत - आधा फसाना’ जैसा है।

परिसीमन के साथ आरक्षण को जोड़ने से एक और समस्या भविष्य में उत्पन्न होने की अत्यधिक संभावना है। सीटों के परिसीमन का मुख्य आधार जनसंख्या होती है और उत्तरी भारत के राज्यों में जनसंख्या वृद्धि, दक्षिण भारत के राज्यों की तुलना में कहीं अधिक तेज गति से हुई है। अतः यह स्पष्ट है कि आगामी परिसीमन के बाद होने वाली चुनाव में लोकसभा सीटों की संख्या, उत्तर भारत में कहीं अधिक बढ़ेगी और दक्षिण भारत में कम बढ़ेगी । इसका अर्थ यह हुआ कि उत्तर भारत के सांसदों की संख्या दक्षिण भारत के सांसदों की तुलना में कहीं अधिक हो जाएगी। यह तथ्य भाजपा के पक्ष में है क्योंकि उत्तर भारत में भाजपा को अपेक्षाकृत कहीं अधिक सीटें प्राप्त होती हैं, चाहे वह उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश या राजस्थान कोई भी हो।

इस असंतुलन के कारण यह लगता है कि परिसीमन का काम आसानी नहीं होने वाला है क्योंकि दक्षिण के विभिन्न क्षेत्रीय दलों द्वारा इसका विरोध कठोर किया जाएगा । परिसीमन आयोग भी इस दिशा में कुछ विशेष नहीं कर पाएगा। यह संभव है कि राज्यवार सीट निर्धारण भारी विवाद का प्रश्न बनकर रह जाए जिसके कारण परिसीमन आयोग की रिपोर्ट को लागू करना भी कठिन हो जाय। परिसीमन का निर्णय हुए बिना महिलाओं के लिए आरक्षण को लागू करना भी सम्भव नहीं हो पाएगा। क्यों भारतीय जनता पार्टी ने आवश्यक संशोधन करके महिला आरक्षण को आगामी चुनाव से ही लागू नहीं कर दिया, इसका एक संभावित कारण यह हो सकता है कि वर्तमान पुरुष संसद सदस्य या सम्भावित पुरुष संसद सदस्य अपना प्रभुत्व नहीं कम करना चाहते हों और वह अपना स्थान महिलाओं को देने में रुचि कम रखते हों। वास्तविकता भी समाज की यही है कि पुरुष वर्ग महिलाओं के सशक्तिकरण की बात तो करता है किंतु जब भी कभी अधिकारों को बांटने का प्रश्न होता है या स्थानांतरित करने का प्रश्न होता है, वह टालता चला जाता है।

यदि नीयत साफ हो तो आरक्षण की भी आवश्यकता नहीं होती है। इस धारणा को पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने सिद्ध किया है जहां संसद में उसके कुल सदस्यों में से 40प्रतिशत महिलाएं हैं। अब तक भी किसी दल को, महिलाओं को अधिक प्रतिनिधित्व देने से, किसी ने नहीं रोका था। यदि वास्तव में वे महिलाओं के हितैषी होते, तो बिना किसी कानून के भी अपनी ओर से चुनाव में टिकट बांटते समय 50प्रतिशत टिकट महिलाओं को दे सकते थे। ऐसा न करना उनकी दोहरी मानसिकता का ही प्रमाण है।

इस अवसर पर यह भी विचारणीय है कि क्या किसी भी वर्ग की स्थिति को सुधारने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त कदम उनके लिए आरक्षण ही है? यदि ऐसा होता तो पंचायत एवं नगर निकायों में जहां लगभग 50प्रतिशत आरक्षण 30 वर्ष से चला रहा है, वहां क्या हम कह सकते हैं कि देश के ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति में बहुत सुधार आ गया है? महिलाओं पर अत्याचार के आंकडे तो कुछ और ही स्थिति दर्शाती है। कुछ महिला प्रतिनिधियों के चुने जाने मात्र को ही महिलाओं की स्थिति में सुधार का प्रमाण नहीं माना जा सकता। भारत में इंदिरा गांधी 15 वर्षों तक प्रधानमंत्री रहीं किन्तु इसके बाद भी महिलाओं की स्थिति में बहुत सुधार आया है, ऐसा कहना संभव नहीं है। सुधार का सबसे बड़ा माध्यम महिलाओं की शिक्षा एवं समाज की मानसिकता में परिवर्तन है । यह भी विचारणीय है कि क्या किसी वर्ग के हितों की रक्षा उसी वर्ग के व्यक्तियों द्वारा ही की जा सकती है? यह आवश्यक नहीं है कि अनुसूचित जाति, जनजाति के हितों की रक्षा केवल उनके वर्ग के अधिक अधिकारियों की नियुक्ति से ही हो पाती है। जिन राज्यों में महिला मुख्यमंत्री रहीं जैसे उत्तरप्रदेश और राजस्थान, क्या वहां हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि महिलाओं की स्थिति में बहुत बदलाव आया है? केवल किसी महिला के किसी पद पर बैठने से महिलाओं की स्थिति में सुधार आएगा, यह सोच भी बहुत सही नहीं है।

इन सब बातों के बावजूद यदि महिला आरक्षण को इसका सशक्त माध्यम माना भी जाए तो इसे तत्काल लागू नहीं करने में भी यही मानसिकता आड़े आ रही है। सरकार ने संविधान में संशोधन कर 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने का निर्णय तो ले लिया है, किंतु इसे जनगणना और परिसीमन से जोड़कर, इसके लागू होने की तिथि को अनिश्चितकाल के लिए आगे बढ़ा दिया है । कोई नहीं कह सकता कि आगामी जनगणना कब होगी और परिसीमन कितने समय में कब पूरा होगा? परिसीमन के बाद ही राज्यवार सीटों की संख्या निर्धारित होगी। यदि विवाद उत्पन्न हुआ तो फिर इसके बाद परिसीमन कब पूरा होगा और कब उसके बाद महिला आरक्षण वास्तविक रूप में धरातल पर महिलाओं को प्राप्त हो सकेगा, यह सब भविष्य के गर्भ में है । अभी से इतना शोर शराबा करना और इतना प्रसन्न होना या समारोह आयोजित करना केवल राजनीति से ही प्रेरित है। महिला आरक्षण के संविधान संशोधन संसद द्वारा पारित हुआ है यह एक वास्तविकता है किंतु इसके लागू होने की तिथि के बारे में अनिश्चितता होने के कारण हम तो फिलहाल यही कह सकते हैं कि देश में महिला आरक्षण ‘आधी हकीकत – आधा फसाना’ जैसा है। यदि वास्तव में सभी दल महिलाओं का लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में अधिक प्रतिनिधित्व चाहते, तो तृणमूल कांग्रेस की तरह सब, पर्याप्त संख्या में अपने महिला उम्मीदवार चुनाव में उतारते। तब इसी प्रकार के आरक्षण की कोई आवश्यकता ही नहीं रहती। सरकारों को समझना होगा कि केवल आरक्षण ही सब समस्याओं की रामबाण नहीं है। इस हेतु पुरुषों की मानसिकता में बदलाव बहुत बड़ी बाधा है। अर्थिक और सामाजिक रूप से महिलाओ का क्षमता वर्धन होने पर वे अपने बलबूते पर स्वयं चुनाव जीतकर आ जाएंगी।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

भारत को विश्व पटल की जटिलता के बीच रास्ता चुनना होगा

डॉ. रामावतार शर्मा

यदि आप पूरे विश्व में घटित होने वाले घटना चक्र पर नजर डालें तो एक बात स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती है। दुनिया के एक हिस्से में मध्यम और निम्न वर्ग आर्थिक एवम् तकनीकी ऊंचाइयों को छूने के प्रयास में जुटा है। ये लोग हर देश हर समाज में हैं और अपने आसपास की घटनाओं से जुड़े हुए भी हो सकते हैं या फिर सिर्फ अपने उद्देश्य की पूर्ति में एक नलिकीय दृष्टि (ट्यूबलर विजन) के तहत कार्यरत हैं। ये लोग दोनों स्थितियों में राष्ट्र के लिए उपयोगी तथा सार्थक हैं हालांकि प्रथम समूह के लोग ही ज्यादा बेहतर नागरिक कहलाने के अधिकारी हैं। जागरूकता विहीन लोगों से समाज या राष्ट्र में परिवर्तन नहीं आ सकता है हालांकि वे केवल देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने में सहायक हो सकते हैं।

परंतु विश्व में एक बड़ा बहुमत झुंड के रूप में उभरता रहा है क्योंकि झुंड को विकसित करना बड़ा आसान कार्य होता है। बस धर्म या जाति को खतरे में बताओ, कुछ सपने बांटो और डर का काल्पनिक माहौल पैदा करो। इस सम्मिश्रण को बनाना इसी विधि से होता है और यह विश्व के हर क्षेत्र में तैयार होता रहा है परंतु अफगानिस्तान, सीरिया, इराक, लीबिया और सूडान में यह मिश्रण बड़े परिमाण में बना जहां देश धर्म के नाम पर चंदे की पर्ची ले कर आने वाले अब एके 47 के साथ आने लगे हैं, देश को छिन्न-भिन्न कर रहे हैं। इस तरह से जो विश्व पहले सबल तथा निर्बल में विभक्त होता रहा था वह अब डेस्क पर कार्यरत और सड़कों पर घूमते झुंड में विभक्त होता जा रहा है परंतु यह नया ध्रुवीकरण किसी भी राष्ट्र के हित में नहीं हो सकता जैसा की उपरोक्त देशों की ताजा स्थिति इंगित कर रही है।

चीन में शि जिन पिंग की अपारदर्शी, एकाधिकारवादी प्रवृत्ति और आसपास के देशों की भूमि या सागर हड़पने की मनोवृति के चलते पश्चिमी धनी देशों ने मेन्युफैक्चरिंग के लिए चाइना प्लस वन की नीति बनाई है जिसमें वे वियतनाम और भारत जैसे देशों को प्रोत्साहन देना चाहेंगे। भारत का निश्चित तौर पर विकास हुआ है परंतु इस विकास का नब्बे प्रतिशत हिस्सा चंद लोगों के पास गया है जबकि करोड़ों युवा एवम् मध्य उम्र के लोग रोजी-रोटी की उस समस्या से जूझ रहे हैं जो पकोड़े तलने या सब्जी बेचने जैसे सुझावों से हल नहीं होने वाली है।

देश में मेन्युफैक्चरिंग क्षेत्र के रोजगार में तेजी से कमी आयी है और विश्व बैंक के अनुसार सिर्फ कृषि क्षेत्र में ही रोजगार का कुछ विस्तार हुआ जो कम आय का क्षेत्र है।

आज सब लोग इस बात से अनभिज्ञ बने रहना चाहते हैं कि आने वाले समय में क्या होने वाला है परंतु भूतकाल में क्या हुआ था और कैसे हुआ था उस सब के मनगढ़ंत कथन पर समय बर्बाद कर रहे हैं। वास्तविक धरती के सृजन से दूर होते लोग सामाजिक मीडिया के द्वारा फैलाए जाए दुष्प्रचार के सृजन से जुड़ते जा रहे हैं मानो हथेलियों पर सरसों की फसल खड़ी कर देंगे। आज यदि हम भारत की ही बात करें तो सामान्य से कम मानसून की बरसात हुई है, मुद्रास्फीति एवम् ब्याज दरें बढ़ी हुई हैं, विदेशी निवेश तथा वेंचर कैपिटल निवेश दोनों में गिरावट हुई है, रुपए का तेजी से अवमूल्यन हुआ है तथा प्रत्यक्ष और परोक्ष रोजगार में कमी आई है। यह आश्चर्य की बात है कि इन महत्वपूर्ण मुद्दों से हट कर देश इस बात की बहस में व्यस्त है कि राजा मिहिर भोज की जाति क्या थी।

भूतकाल में जीना मनुष्य के मनोविज्ञान का एक कमजोर पक्ष है जो उसके बौद्धिक एवम् व्यावसायिक विकास में बड़ी बाधा भी है तथा इस मनोस्थिति से बाहर आए बिना तीव्र गति से विकसित होती इस तकनीकी आधारित दुनिया में बने रहना आसान नहीं है। मेटावर्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ब्लॉकचैन तकनीकी, रोबोटिक्स आदि की दुनिया में राजा भोज की जाति तलाशना कितना महत्वपूर्ण है इस बारे में लोगों को अपने विवेक से ही सोचना होगा। अगले चंद दशक पूरे विश्व के देशों की दिशा चुनने वाले वर्ष होंगे जहां प्रगति के बड़े अवसर भी होंगे तो रसातल में जाने की कई खाइयों के मुंह भी खुलेंगे। भारत जैसे दोराहे पर खड़े देशों को चयन करना होगा कि वे झुण्डों के साथ जायेंगे या फिर तकनीकी आधारित, प्रकृति पोषक और संवाद से परिपूर्ण सामाजिक जीवन का रास्ता अपनाएंगे। चयन आसान नहीं होगा यह बात तो निश्चित है क्योंकि हर झुंड अब अपना अपना हिस्सा छीनने को आतुर प्रतीत हो रहा है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

दशमी पर बाबा रामदेव मंदिर में उमड़े श्रद्धालु

- **51 ज्योत से की महाआरती, 11 हजार लड्डुओं का लगाया भोग**

जोधपुर, (कासं)। लोक देवता बाबा रामदेव का पुण्य समाधि दिवस दशमी सोमवार को शहर के सभी रामदेव मंदिरों में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर मसूरिया स्थित बाबा रामदेव मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रही। सुबह 51 ज्योत से महाआरती की गई। पंचामृत से अभिषेक किया गया। साथ ही 11 हजार लड्डुओं का भोग लगाया गया। आज महाप्रसादी वितरण के साथ ही मसूरिया मेला भी सम्पन्न हो गया।

दशमी पर सोमवार सुंबह से ही मसूरिया स्थित बाबा रामदेव मंदिर में जातरूओं का तांता लगा रहा। देश के विभिन्न भागों से आए जातरूओं ने बाबा रामदेव के गुरु बालीनाथ की समाधि के दर्शन किए। मसूरिया पहाड़ी स्थित बाबा रामदेव मंदिर में उनके गुरु बालीनाथ की समाधि पर सुबह 51 ज्योत से महाआरती की गई। दोपहर में महाभिषेक किया गया। समाधि स्थल पर सुबह ही पंचामृत से बाबा का अभिषेक किया गया। मसूरिया बाबा रामदेव के गुरु बालीनाथ के समाधि मंदिर का प्रबंधन करने वाले पीपा क्षित्रय समस्त न्याति सभा ट्रस्ट अध्यक्ष नरेंद्र चौहान ने बताया कि मन्दिर पर फूल मण्डली भी सजाई गई।

वहीं राइकाबाग युगलजोड़ी बाबा रामदेव मंदिर में सैनाचार्य अचलानंदगिरि के सानिध्य में पूजा अर्चना की गई। इधर भदवासिया क्षेत्र में 80 फीट रोड पर गांधीनगर स्थित बाबा रामदेव मंदिर में बाबा की दशमी पर धार्मिक कार्यक्रमों की धूम रही। वहीं संत शिरोमणि भाऊ रामचंद्र मार्ग सरदारपुरा स्थित बाबा रामसापीर मन्दिर में चार दिवसीय भादवा मेले में सोमवार को सुबह दशम की आरती की गई। मंदिर संचालक भगवंती देवी के सान्निध्य में बाबा रामदेव, भाऊ रामचंद्र, भाऊ कन्हैयालाल का जयकार लगाकर श्रद्धालुओं ने शीश नवाया। प्रकाश, पवन फुलवानी ने बताया कि सोमवार को दशम पर संत लीला शाह सिन्धी स्वर्गाश्रम पर भाऊ रामचंद्र की समाधि पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित कर सत्संग प्रवचन किया गया।

सात बार असफलता के बाद मिली सफलता

सुजानगढ़, (निसं)। सात बार की असफलता से निराश नहीं होते हुए लगातार मेहनत से गांव सडू छोटी के हनुमान ढाका ने लेवल-2 में गणित-विज्ञान का शिक्षक बन कर सफलता प्राप्त की है। क्षेत्र के गांव सडू छोटी निवासी हनुमान ढाका का राज्य कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा आयोजित सामान्य अध्यापक भर्ती परीक्षा लेवल 2 में गणित-विज्ञान विषय के लिए सामान्य श्रेणी से अंतिम रूप में चयन हुआ है। ढाका ने बताया कि एलडीसी 2013 लिखित परीक्षा व टाइपिंग परीक्षा पास हुई, लेकिन अंतिम रूप से चयन नहीं हुआ। इसके बाद वरिष्ठ अध्यापक भर्ती 2016 गणित विषय से परीक्षा दी, लेकिन असफलता हाथ लगी। रीट 2018 में असफलता का मुख्य कारण ग्रेजुएशन वेटेज रहा, 113 अंक बने। इसी प्रकार वरिष्ठ अध्यापक भर्ती 2018 में प्रयास विफल रहा। स्कूल व्याख्याता भर्ती 2018 फिजिक्स से परीक्षा दी, लेकिन प्रोविजनल चयन हुआ, अंतिम रूप से चयन नहीं हुआ। रीट 2021- रद्द हो गई, जिसमें 122 अंक बने। स्कूल व्याख्याता भर्ती 2022 में भी असफलता-प्राप्त हुई।

खेजड़ली के शहीदों को श्रद्धांजलि दी

- **आहुति देने वाले शहीदों की याद में भरा मेला, रक्तदान किया**

जोधपुर, (कासं)। खेजड़ली शहीदी राष्ट्रीय पर्यावरण संस्थान व अखिल भारतीय बिश्नोई जीव रक्षा सभा की ओर से प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला खेजड़ली शहीदी मेले का आयोजन सोमवार को खेजड़ली स्मारक परिसर में किया गया। पेड़ों की रक्षार्थ अपने प्राणों की आहुति देने वाले 363 लोगों की याद में यह मेला भरा गया। यहां पर्यावरण रक्षार्थ विष्णु हवन कुंड में आहुतियां व परिक्रमा कर अमर शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। साथ ही खेजड़ली परिसर में नवनिर्मित जम्भेश्वर मंदिर में पर्यावरण प्रेमियों ने परिक्रमा देकर गुरु जंभेश्वर के बताए मार्ग व 29 नियमों की आचार संहिता पर चलने का संकल्प लिया।

जोधपुर शहर से करीब 28 किलोमीटर दूर खेजड़ली में अमृता देवी के नेतृत्व में विक्रम संवत् 1787 भादवा शुक्ल पक्ष की दशमी को अपने प्राणोत्सर्ग करने वाले 363 शहीदों की स्मृति में सोमवार को विश्नोई समाज के लोगों द्वारा पर्यावरण मेले का आयोजन किया गया। सुबह विष्णु हवन व 120 शब्दवाणी और वैदिक मंत्रोच्चार से पाहल (पवित्र जल) का आचमन कर पूरे दिन सैकड़ों किलोठााम घी व खोपरा की आहुतियां दी गई। संस्थान अध्यक्ष मलखानसिंह बिश्नोई ने बताया कि मेले में देशभर से समाज के श्रद्धालुओं के साथ बड़ी संख्या में पर्यावरण प्रेमी शामिल हुए। शहीदों की स्मृति में बनाए गए शहीद स्तम्भ पर सुबह ध्वजारोहण, हवन किया गया।

इस मौके गुरु जंभेश्वर प्रदत्त 120 शब्द वाणी एवं वेत्र मंत्रों के साथ पर्यावरण संरक्षण हवन हुआ। वहीं खेजड़ली स्मारक स्थल परिसर में हर वर्ष की भांति विश्नोई टाईगर्स वन्य एवं संस्था विश्नोई टाईगर फोर्स द्वारा 363 शहीदों की स्मृति में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के मंच पर सभी रक्तदाताओं को स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। मेले में दूर-दूर से पर्यावरणविद् सहित बड़ी संख्या में लोग पहुंचे और शहीदों के स्मारक पर सामूहिक पर्यावरण यज्ञ में आहुति देकर श्रद्धांजलि दी।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.पद्मजा शर्मा मीरां पुरस्कार से सम्मानित

जोधपुर, (कासं)। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. पद्मजा शर्मा राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के सर्वोच्च मीरां पुरस्कार से उदयपुर में सम्मानित हुई। यह सम्मान अकादमी के सभागार में उनकी कहानी की किताब मोबाइल पिक और हॉस्टल के लिए गांधीवादी चिंतक, मुख्य अतिथि कुमार प्रशांत, जाने माने कवि, सामान्य अतिथि लीलाधर मंडलोई, अकादमी अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण तथा अकादमी सचिव डॉ. बसंत सिंह सोलंकी के हाथों प्रदान किया गया।

साहित्य अकादमी ने 24 जुलाई को पिछले तीन साल के अनेक पुरस्कारों की घोषणा की थी। इनमें 2021-22 का मीरा पुरस्कार डॉ. पद्मजा शर्मा को प्रदान किया गया। समकालीन हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर कवि और गद्यकार डॉ. पद्मजा शर्मा की विविध विधाओं की अब तक 25 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप पिछले चार दशक से कविता, शब्दचित्र, कहानी के साथ ही लघु कथा लेखन, डायरी, समीक्षा, साक्षात्कार, नव साक्षरों के लिए लेखन में प्रवृत्त हैं। आप बच्चों और किशोरों के लिए भी लिखती हैं। मीरा पुरस्कार जिस कहानी की किताब मोबाइल पिक और हॉस्टल के लिए मिला उसकी 90 कहानियाँ किशोरों के जीवन, उनके तनाव, उनके सपनों, उनके संघर्षों और मनोविज्ञान पर आधारित हैं। किशोरों पर बहुत कम साहित्य रचा गया है, इसलिए ये कहानियाँ ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। आपको एक दर्जन से अधिक स्तरीय साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

इन्हें मिला पुरस्कार :- भानु भारवि, गुलाम मोइनुद्दीन माहिर, जितेंद्र कुमार सोनी को सुधींद्र पुरस्कार, संदीप कुमार मील, रीना मेनारिया और दिनेश पांचाल को रांगेय राघव, सदाशिव क्षोत्रिय, माधव नागदा, दिनेश कुमार माली को देवराध उपाध्याय पुरस्कार, ओम नागर, उमा और डॉ. विमला भंडारी को कन्हैयालाल सहल पुरस्कार, अशोक राही, राजकुमार इंद्रेश, प्रमोद कुमार गोविल को देवीलाल सामर, पंकज वीरवाल किशोर, पूरण शर्मा और सत्यनारायण सत्य को शंभु दयाल सक्सेना पुरस्कार, माधव राठौड़, बृजेश माथुर और अश्विनी त्रिपाठी को सुमनेश जोशी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर कुमार प्रशांत ने कहा समाज को साथ लेकर चले वही साहित्य। जैसे जड़ के बिना वृक्ष नहीं वैसे समाज के बिना साहित्य नहीं जो बोल नहीं सकता, लिख नहीं पाता अपनी बात, उन सबकी बात को समेटता है साहित्य। कार्यक्रम के सारस्वत अतिथि जाने माने कवि लीलाधर मंडलोई ने विष्णु नागर की कविता हत्यारे भी भले होते हैं सुनाते हुए कहा आज के समय को गहराई से प्रतिबिंबित करती है यह कविता। हम ऐसे समय में हैं जब सोचना होगा आपकी नैतिकता क्या है स्वधर्म क्या है। लेखक का स्वधर्म क्या है। अकादमी अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण ने कहा मुख्य अतिथि और सम्मान्य अतिथि ने वह बात कही जो इनको कहनी चाहिए थी। इस अवसर पर सम्मानित साहित्यकारों में से आर डी सैनी, गोविंद माथुर, डॉ. पद्मजा शर्मा और माधव राठौड़ ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संदेश त्यागी और अमृता बाकोड़िया ने किया। अकादमी की सरस्वती सभा के सदस्य डा कालूराम परिहार सहित सैंकड़ों साहित्यकार और साहित्य प्रेमी सभागार में उपस्थित थे।

भारत का संविधान
उद्देशिका

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. पद्मजा शर्मा राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के सर्वोच्च मीरां पुरस्कार से उदयपुर में सम्मानित हुई।

राशिफल मंगलवार 26 सितम्बर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2080, श्रवण नक्षत्र प्रातः 9:42 तक, सुकर्मा योग दिन 11:45 तक, बव करण दिन 3:23 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 8:28 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज द्विपुष्कर योग और राजयोग दिन 9:42 से रात्रि 1:41 तक है। आज जलझूलनी एकादशी व्रत वैष्णवों की है। आज श्री वामन जयन्ती, हरिवासराभाव, विजय महाद्वादशी और श्रवण द्वादशी व्रत, भुवनेश्वरी जयन्ती है। पंचक रात्रि 8:28 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:19 से 10:49 तक, लाभ-अमृत 10:49 से 1:48 तक, शुभ 3:17 से 4:47 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:20, सूर्यास्त 6:16

मेष

घर-परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी।

मिथुन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कर्क

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।

कन्या

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर/परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

तुला

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

मकर

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नवीन कारोबारी अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कुंभ

व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेंगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज अनावश्यक धन खर्च होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मित्रों/रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं।

मीन

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।